

हज और उमरा

कुरान और हदीस के प्रकाश में



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْنَا
الْقُرْآنَ الْعَرَبِيَّ الْقُرْآنَ الْحَقَّ
وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْنَا
الْقُرْآنَ الْعَرَبِيَّ الْقُرْآنَ الْحَقَّ

الحج والعمرة

संग्रहण एवं संकलन:

अरशद बशीर उमरी मदनी हफिज़हुल्लाह
पूर्व शिक्षक, मस्जिद नबवी और हज गाइड

समीक्षा :

फ़ज़िलतु अल-शेख अनीस-उर-रहमान आज़मी उमरी मदनी, हफिज़हुल्लाह
शिक्षकों के प्रोफेसर, फकीह और मुहद्दिस
फ़ज़िलतु अल-शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी, हफिज़हुल्लाह
हज के दौरान पूर्व मुफ़्तती, हरमे मक्की, सऊदी अरब

अनुवादक:

साकिब उमरी नज़ीरी, नडियाद, गुजरात
रियाज़ हैदराबाद



لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ
لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ
وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक ता शरीक
लक लब्बैक इन्नल हम्द वन-निअमत लक
वल-मुल्क ता शरीक लक

Important Phone Numbers During the Hajj

Ambulance



:997



Hospital

: +9662 5361280

+9662 5380891

+9662 5367398



Rescue Emergency

:911, 112 & 08

Police



:999



Traffic

:993



Fire

:998



अल्हम्दुलिल्लाहि वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाहि व
अला आलिहि व अस्हाबिहि अज्मईन, अम्मा बाद

हज इस्लाम के पांच स्तंभों में से एक है।

(सूरह आलि-इमरान: 3:97, सहीह बुखारी, हदीस नंबर: 8)

हज अल्लाह तआला द्वारा निर्धारित इबादतों में से एक है, जिसके माध्यम से एक व्यक्ति अपने आप को निर्माता अल्लाह की प्रसन्नता के लिए समर्पित करता है, ताकि उसका सर्जन हार उससे प्रसन्न हो। किसी भी कार्य को स्वीकार करने के लिए दो शर्तें हैं: (1) इखलास: इखलास का अर्थ है अल्लाह तआला को खुश करने के लिए सभी कार्य करना (2) उन कार्यों को अल्लाह और उसके) दूत (रसूल सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम द्वारा बताए गए तरीके के अनुसार करना। इन दो शर्तों का सारांश यह है कि तीर्थयात्री (हाजी) को बहुदेववाद (शिरक), पाखंड, नवीनता (बिद्अत) और सभी प्रकार की अवज्ञा से बचना चाहिए और जितना संभव हो सके अल्लाह और उसके दूत का पालन करना चाहिए।

अल्लाह के दूत ﷺ ने कहा: "खुजु अन्नी मनासिकुम" (सहीह अल-जामेअ: 7882) "आप लोग मुझसे हज की विधि सीखें, यह पुस्तिका वास्तव में तीर्थयात्रियों के लिए प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए इसी क्रम में तैयार की गई है। संकलन का कारण: हज के मौसम के दौरान, अल्लाह ने मुझे सऊदी अरब के हरमैन में संगठन द्वारा अनुमोदित विशिष्टताओं के आधार पर पैगंबर की मस्जिद के तल पर



तीर्थयात्रियों को आधिकारिक मार्गदर्शन देने का अवसर दिया है, जिसके दौरान जब तीर्थयात्रियों की समस्याओं का ज्ञान प्राप्त हुआ और उन तीर्थयात्रियों की पीड़ा का आंकलन किया गया जो हज और उमरा के नियमों से परिचित नहीं थे, तो इस शीर्षक के तहत सार्वजनिक सुविधा के लिए एक आसान संकलन का विचार ठोस हो गया।

विशेषता: यह पुस्तक वास्तव में सभी हज और उमराह नियमों, समस्याओं, कार्यों और गुणों को स्पष्ट भाषा, बुलेट बिंदुओं, संख्याओं, चित्रों और शीर्षकों के रूप में सरल बनाकर तैयार की गई है ताकि हज और उमराह के तीर्थयात्री इसे एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग कर सकें। इसे अपने पास रखें और हर जगह इसका लाभ उठाएं।

आभार: मैं इस पुस्तक को पूरा करने में मदद करने वाले सभी विद्वानों, सहायकों और दोस्तों को धन्यवाद देना चाहता हूं, विशेष रूप से शेख अनीसुर रहमान आजमी उमरी मदनी, शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी और आस्क इस्लाम पीडिया से जुड़े सभी दोस्तों, विशेष रूप से श्री मंसूर साहब, श्री रफी साहब, शेख अब्दुल्ला उमरी, शेख नूरुद्दीन उमरी, शेख अब्दुल वासेअ उमरी (Ph. D), शेख मोइनुद्दीन उमरी, शेख अब्दुल रहमान उमरी मदनी, मुहम्मद माजिद उमरी, मुहम्मद मुजाहिद उमरी, श्री अब्दुल्ला बाजबीर और उनका परिवार और मैं श्री फहीम साहब, श्री जावेद साहब, डॉ.जाकिर रहमान और अरशद बशीर उमरी मदनी की पत्नी सुश्री



नसरीन फातिमा का आभारी हूँ जिन्होंने इसका रोमन अंग्रेजी में अनुवाद किया और इसी तरह श्री निज़ामुद्दीन, श्री अब्द रहमान का भी आभारी हूँ और, मुश्ताक अहमद और इश्तियाक अहमद का आभारी हूँ, अल्लाह उन सभी को पुरस्कृत करे।

मैं जामिया दारु सलाम उमराबाद और जामिया इस्लामिया मदीना मुनक्वरा के सभी शिक्षकों और अधिकारियों का बेहद आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस काबिल बनाया। अल्लाह तआला हमारी और उन सभी की खूबियों को मीज़ान में तौलें।

दुआ: अंत में, मैं प्रार्थना करता हूँ कि अल्लाह तआला इबादत के इस महत्वपूर्ण कर्तव्य को आसान बनाए और इस प्रयास को स्वीकार करे। और मेरे लिए, मेरे माता-पिता, परिवार और मददगारों के लिए इस दुनिया और आखिरत में मुक्ति का साधन बनाए। आमीन।

वस्सलामु अलयकुम

तीर्थयात्रियों (हाजियों) से प्रार्थना का अनुरोध

अरशद बशीर उमरी मदनी



पुस्तक के संबंध में आधिकारिक निकायों से प्रतिक्रिया

(1) सऊदी अरब की प्रसिद्ध इस्लामी संस्था (IslamHouse.com) ने इस पुस्तक को "सर्वोत्तम संकलन" माना और कहा: "इस पुस्तिका में शेख हाफिज़ अरशद बशीर मदनी, हफिज़हुल्लाह, ने हज और उमरा के गुणों, कार्यों, नियमों और मुद्दों को एक बहुत ही सामान्य और सरल भाषा के रूप में संकलन करने की पूरी कोशिश की है। अंक, संख्याएँ, चित्र और शीर्षक ताकि आगंतुक इस पुस्तिका को हरम शरीफ़ के लिए एक गाइड के रूप में आसानी से उपयोग कर सकें।

नाचीज़ की अधूरी राय के अनुसार, यह उर्दू भाषा में सचित्र रूप में हज और उमरा मार्गदर्शन का सबसे अच्छा संकलन है।

(2) अल्हम्दुलिल्लाह, पाकिस्तान की मशहूर इस्लामिक संस्था ने भी इस किताब का समर्थन किया है।

(3) "अल्हम्दुलिल्लाह, यह पुस्तक वास्तव में एक मार्गदर्शक है।"

फ़ज़िलतु अल-शेख अनीस-उर-रहमान आज़मी उमरी मदनी,
हफिज़हुल्लाह

(4) "अल्हम्दुलिल्लाह यह किताब उपयोगी है"

फ़ज़िलतु अल-शेख ताहा सईद खालिद उमरी मदनी,
हफिज़हुल्लाह



उमरा के लिए इस पुस्तक के 24 अंक और हज के लिए
25 अंक पूरे करना याद रखें

शीर्षक
हज और उमरा चेकलिस्ट (Checklist)
हज और उमराह सदस्यों, दायित्वों, निषेधों और अनुमत गतिविधियों का विवरण
उमरा का तरीका
हज का तरीका
मदीना तैय्यबा की शुभ यात्रा
उमरा और हज की विधि, रोमन अंग्रेजी में
हज और उमरा के लिए पूरी दुआएँ
अल्लाह के नाम (अस्माए हुस्ना)

नोट: इस पुस्तक के (Android app) और (DVD) भी उपलब्ध हैं।



उमरा चेकलिस्ट (Umrah Check List)

1. क्या आप पाकीज़गी और सफ़ाई का ख़्याल रखते हुए मीकात तक पहुंचे और ऊंची आवाज में (अल्लाहुम्म लब्बैक उम्रतन) कहते हुए उमरा की नियत की?
2. क्या आपने एहराम पहन लिया है? उम्मीद है कि उनके शिष्टाचार का ख़्याल रखा होगा.'
3. क्या आपको तल्बिया याद है? लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन-निअ्मत लक वल-मुल्क ला शरीक लक
4. क्या आप मस्जिद हरम में प्रवेश के लिए अनुष्ठानों और दुआओं की व्यवस्था कर रहे हैं?
5. तवाफ़े कुदुम (पहला तवाफ़) शुरू करने से पहले इज़्तिबाअ की हालत करना न भूलें।
6. क्या आपने हजरे असवद को चूमकर या छूकर या उसकी ओर इशारा करके तवाफ़ शुरू किया है?
7. क्या आप जानते हैं कि रमल (तेज चलने के पहले तीन दौर) पुरुषों के लिए है, महिलाओं के लिए नहीं?
8. क्या आपने तवाफ़ के सात चक्र पूरे किये और दो रकअत नमाज़ पढ़ी? (यह याद रखना चाहिए कि प्रत्येक चक्र के लिए कोई अलग दुआ सिद्ध नहीं है, हालांकि, कुरान और पैगंबर की दुआएँ और पवित्र कुरान का पाठ किया जा सकता है) मुझे आशा है कि रुकन यमानी और हजरे अस्वद के बीच



हर चक्र में रबबना आतिना फिद-दुन्या हसनतंव व फिल-आखिरति हसनतंव व किना अज़ाबन-नार पढ़ी होगी।

9. तवाफ़ (सात चक्र) के बाद मक़ाम इब्राहीम या जहां आपको जगह मिलती है, वहां दो रकअत पढ़ना न भूलें। क्या आपने नमाज़ के बाद ज़मज़म पानी पिया?

10. क्या आपने सफा से शुरू करके सात चक्र पूरे कर लिये? अनुष्ठानों और दुआएं करना न भूले। सज्जनों, हरे संकेतों की सीमा के भीतर तेजी से चलना न भूलें।

11. सई के बाद, पुरुषों को सारे बाल निकालने होते हैं जबकि महिलाओं को एक पोर बाल निकालना पर्याप्त होगा।





हज चेकलिस्ट (Hajj Check List)

1. क्या आपने 8 धू-अल-हिज्जा को हज के लिए एहराम बांधा है? (आपके निवास या मीकात से)
2. क्या आपने दिल में हज का इरादा करके हज के लिए "अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन" के शब्दों का उच्चारण किया है? तलबिया लगातार जारी रखें.
3. क्या आपने मिना में कसर के साथ जुहर की नमाज़ अदा की है? (इसी प्रकार बाकी नमाज़ें भी अपने समय में)
4. क्या आपने 8 धू अल-हिज्जा की रात मिना में बिताई है?
5. याद रखें 9/ धू-अल-हिज्जा को सूर्योदय के बाद तलबिया, तकबीर और तहलील कहते हुए मिना से अरफात के लिए प्रस्थान करना है।
6. दोपहर के समय (यदि संभव हो) अरफात मैदान में इमामे हज का उपदेश सुनना याद रखें।
7. खुतबा के बाद, जुहर के समय, जुहर और अस्त्र को जमाअत में जमा (एक साथ) और कसर के साथ किया जाना चाहिए।
8. अरफा के दिन बार-बार दुआएं मांगनी चाहिए।
9. जुहर और अस्त्र की नमाज़ अदा करने के बाद अरफात में क़िबला की ओर मुंह करके दुआएं करनी चाहिए।
10. सूर्यास्त के बाद, मगरिब की नमाज़ अदा किए बिना शांति और गरिमा के साथ तलबिया कहते हुए मुजदलिफा के लिए प्रस्थान करना चाहिए।



11. मुजदलिफा में कसर के साथ मगरिब और ईशा की नमाज़ पढ़ें।
12. यह रात मुज़दलिफ़ा में आराम करते हुए बिताओ
13. 10 / धू अल-हिज्जा पर सूर्योदय से पहले शांति और सम्मान के साथ तल्बिया कहते हुए मुजदलिफ़ा से मिना के लिए प्रस्थान करें।
14. सूर्योदय के बाद जमरण अक़बा (बड़ा) में सात कंकड़ियां फेंकें।
15. रम्मी (कंकड़ फेंकना) के बाद कुरबानी देना ।
16. कुर्बानी के बाद सिर मुंडवाएं (मुंडाएं) या तकसीर (hair cutting) बनाएं और एहराम की चादरें उतारकर अपने सामान्य कपड़े पहनें और हलाल हो जाएं।
17. मिना से मक्का जाओ और तवाफ़ करो, ज़मज़म पियो, कोशिश करो और मिना लौट आओ।
18. अय्यामे तशरीक (धू अल-हिज्जा की 10वीं से 13वीं) के दिनों की रातें मिना में बितानी चाहिए। और उन दिनों में सूर्यास्त के बाद तीन जमरातों को कंकरियाँ मारनी चाहिए।
19. 12/ धू अल-हिज्जा को सूर्यास्त से पहले मिना छोड़ दें या 13 ज़िलहिज्जा को मिना में रात बिताएं और सूर्यास्त के बाद मिना छोड़ दें।
20. मक्का छोड़ने से पहले तवाफ़े वदाअ करना न भूलें।



हज और उमरा के अरकान, कर्तव्यों, निषेधों और अनुमेय कृत्यों का विवरण

अरकान और कर्तव्यों (वाजिबात) में अंतर

नोट: उमरा या हज रुकन के बिना पूरा नहीं होगा।

नोट: यदि वाजिब जानबूझकर या अनजाने में छोड़ दिया जाता है, तो इसकी भरपाई दम (बकरे का वध) से की जा सकती है। जिसे हरम के परिसर में वध किया जाता है और मक्का में गरीबों के बीच वितरित किया जाता है, तीर्थयात्री स्वयं उसमें से कुछ भी नहीं खा सकता है।

अनिवार्य हज की शर्तें:

1. **इस्लाम:** क्योंकि अगर कोई काफिर हज भी करेगा तो उसका हज कबूल नहीं किया जाएगा।
2. **यौवन:** क्योंकि हज नाबालिग लड़कों और लड़कियों पर अनिवार्य नहीं है, और यदि बच्चा यौवन से पहले हज करता है, तो उसका हज वैध (सहीह) है और यह प्रसवोत्तर हज (नफली हज) होगा, लेकिन यदि वह वयस्क होने के बाद इसे करने में सक्षम है, तो उस पर हज फर्ज है, इसलिए फर्ज अदा करना पड़ता है, क्योंकि यौवन से पहले किये गये हज से फर्ज खत्म नहीं होता।
3. **बुद्धि :** क्योंकि पागल व्यक्ति नियत और अन्य सदस्यों का भुगतान करने में असमर्थ होता है।



4. **सामर्थ्य:** जिसके पास बैत अल्लाह तक पहुंचने की वित्तीय क्षमता है।

यदि शारीरिक रूप से हज करने में असक्षम हो तो अन्य व्यक्ति से हज करवा लें ।

नोट: किसी महिला के लिए महरम रखना सामर्थ्य की शर्त में शामिल है, अगर उसके पास महरम नहीं है तो उस पर हज फर्ज नहीं होगा और अगर कोई महिला बिना महरम के हज करती है तो हज तो वैध(सहीह) होगा लेकिन वह पापी होगी, उसे पश्चाताप करना चाहिए और क्षमा मांगनी चाहिए।

हज के अरकान :

1. एहराम बाँधने का अर्थ है हज में प्रवेश करने का इरादा करना।
2. 9/ धू अल-हिज्जा के पतन के बाद अरफात के मैदान में चलना।
3. 10/ धू अल-हिज्जा या उसके बाद तवाफ़ ज़ियारत करना।
4. सफा और मरवा की सई करना।



हज की बाध्यताएँ (वाजिबात) :

1. अपने निवास या मीक़ात से एहराम बाँधकर शब्दों के माध्यम से इरादा करना।
2. 9/ धू अल-हिज्जा मगरिब तक अरफात में रहेंगे।
3. 10/ धू अल-हिज्जा की रात मुजदलिफा में बिताना।
4. 10/ धू अल-हिज्जा पर कुर्बानी के बाद सिर के सभी बाल मुंडवाना या काटना।

नोट: कुछ विद्वानों के अनुसार यह अरकान में से एक है।

5. 10/ धू अल-हिज्जा केवल बड़ा जमराह और 11, 12 धू अल-हिज्जा के दिन क्रमशः तीन जमरा, अल्लाहु अकबर कह कर सात सात कंकरियां मारना, और 13वीं धू अल-हिज्जा की रात मिना में बिताने वाले व्यक्ति को उस दिन तीनों जमराहों पर कंकड़ियां मारनी चाहिए।

6. धू अल-हिज्जा की 11वीं और 12वीं की रात मिना में और 13वीं की रात भी मिना में बिताई जा सकती है।

7. तवाफे वदाअ करना।

उमरा के अरकान:

1. एहराम बाँधने का अर्थ है दिल से उमरा में प्रवेश करने का इरादा करना।

2. बैत अल्लाह का तवाफ़. (3)

3. सफा और मरवा की सई करना। (4)

उमरा के कर्तव्य:



1. मीकात से एहराम बाँधकर शब्दों के ज़रिए इरादे करना।
2. पूरा सिर मुंडवाना या बाल काटना। (5)
नोट: कुछ विद्वानों के अनुसार यह अरकान में से एक है।
- (2) सहीह मुस्लिम - किताबुल हज - अध्याय फिल इफरादि वल किरानि बिल हज्जि वल उमति - हदीस: 1232
- (3) सहीह मुस्लिम - किताबुल हज - अध्याय जवाज़ि अत तवाफि अला बईरिन व ग़यरिहि - हदीस: 1275
- (3) सहिह अल-बुखारी - किताबुल हज - उमरा के अध्याय - अध्याय मता यहिल्लु अल-मुअतमिरु - हदीस 1793
- (4) सुनन अल- नसाई - किताब अल- मनासिक - इश्आरु अल-हदयि-अय्न यक्सिरु अल मुअतमिरु - हदीस: 2987, सहीह



इहराम की स्थिति में निषिद्ध कार्य और उनका प्रायश्चित्त चित्रों

निषिद्ध कार्य

1. सिर या शरीर के किसी हिस्से से जानबूझकर बाल निकालना, काटना या शेव करना।
2. नाखून काटना
3. खुशबू (इसका मतलब चाय या शरबत की खुशबू नहीं, बल्कि सुगंध है)
4. किसी आदमी के सिर को टोपी या पगड़ी या किसी ऐसी चीज से ढंकना जो सिर पर फिट हो
5. पुरुषों को अपनी शारीरिक संरचना के अनुसार बुने हुए या सिले हुए कपड़े पहनने चाहिए (जैसे शलवार कमीज, बनियान, कोट, स्वेटर, पैंट, पायजामा, आदि) जबकि महिलाओं को दस्ताने और नकाब पहनना चाहिए। (1)
6. जंगली जानवरों का शिकार करना या शिकार में सहायता करना

प्रायश्चित्त करना كفارة

यदि इन पाँच निषिद्ध कार्यों में से कोई गलती से या भूल कर हो जाए, तो उसके लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं है, और यदि वह उनमें से किसी चीज़ को जानबूझकर करता है, तो उसके लिए प्रायश्चित्त है: तीन दिन का उपवास करना या छह



गरीबों को खाना खिलाना या दम (बकरी का वध करना)।

(2)

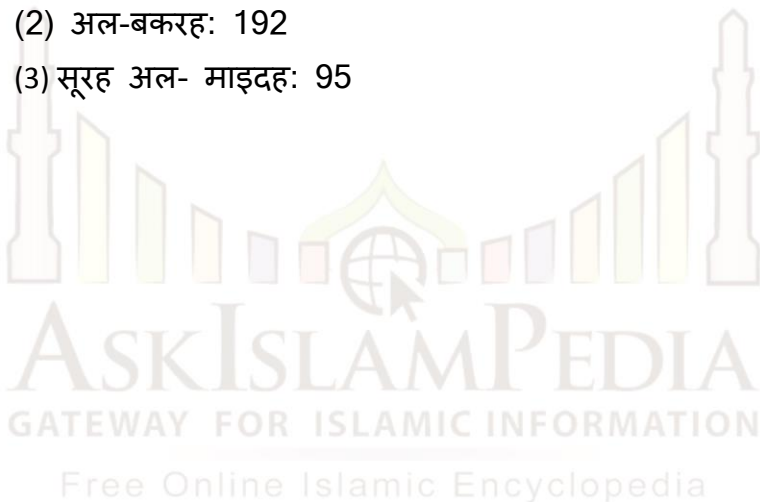
शिकार के बराबर गाय या ऊँट या बकरी का वध करना, उसकी कीमत से अनाज खरीदना और प्रति गरीब एक मुद की दर से गरीबों में बाँटना, या उसके बराबर रोज़े रखना।

(3)

(1) बुखारी: 1814

(2) अल-बकरह: 192

(3) सूरह अल- माइदह: 95





इहराम की हालत में निषिद्ध कार्य और उनका प्रायश्चित्त

चित्रों

निषिद्ध कार्य

7. सगाई करना या सगाई करवाना, विवाह करना या विवाह करवाना

8. पत्नी को चूमना

9. पत्नी के साथ संभोग करना

प्रायश्चित्त करना كفارة

पश्चाताप करके और क्षमा मांगकर पुनर्विवाह करना चाहिए।

(1)

पश्चाताप और क्षमा मांगना चाहिए।

अगर यह सहवास जमरए कुबरा को कंकरियां मारने से पहले 10 तारीख को हुआ तो उसका हज अमान्य होगा। हालाँकि, शेष हज पूरा करेगा, एक गाय या ऊँट का वध किया जाना चाहिए और मक्कावासियों के बीच वितरित किया जाना चाहिए। फिर वाजिब हज अदा करना होगा और अगर जमरए कुबरा को कंकरी मारने के बाद 10वें दिन संभोग किया जाए तो उसका हज तो वैध(सहीह) होगा, लेकिन उसको दम देना पड़ेगा (2)

नोट: अगर किसी महिला को एहराम की हालत में मासिक धर्म या प्रसवोत्तर खून आता है, तो वह बैत अल्लाह के तवाफ को छोड़कर हज और उमरा के बाकी सभी हिस्सों और कर्तव्यों को निभाएगी। (3)



- (1) मुस्लिम: 1409
- (2) मुअता इमाम मालिक- किताब अल-हज, अध्याय निकाह
अल-मुहरिम: 773
- (3) बुखारी: 1560





इहराम की अवस्था में अनुमेय कार्य

1. स्नान करना
2. सिर और शरीर खुजाना
3. मरहम लगाना, दवाइयाँ खाना-पीना
4. आँखों में बूँदें या दवा डालना
5. यातना (तकलीफ) देने वाले जानवरको मारना
6. इहराम की चादरें बदलना
7. अंगूठी, चश्मा, पर्स, बेल्ट या छाते आदि का उपयोग करना
8. बिना सुगंध वाले तेल या साबुन का प्रयोग करें
9. समुद्री शिकार

हज से पहले करने के काम

1. विश्वास (अक्कीदह) में सुधार
(यह याद रखना चाहिए कि शिर्क और नवीनता(बिदअत) से अपने आप को बचाते हुए तौहीद और सुन्नत का पालन किसी भी कीमत पर छूटना नहीं चाहिए) (सूरह लुकमान: आयत: 13)
2. हज के नियम सीखना. (1)
3. पापों का पश्चाताप. (2)
4. स्वीकृति के लिए दुआ (3).
5. यदि लोगों के पास अधिकार है तो भुगतान करें। (4)
6. परिवार के सदस्यों को वसीयत करना. (5)
(यदि वसीयत योग्य कोई वस्तु या चीज़ हो)



7. धार्मिक लोगों के साथ हज करना . (6)
8. आंखों और जीभ का ख्याल रखें. (7)
9. हर काम सुन्नत के मुताबिक करना. (8)
10. इबादत में अधिक समय बिताने के इरादे से निकलना। (9)

हज और उमरा के गुण:

1. उमरा पापों का प्रायश्चित है और हज का एकमात्र इनाम स्वर्ग है। (10)
2. जिहाद के बाद अल्लाह की राह में सबसे अच्छा काम हज है। (11)
3. तीर्थयात्री नवजात शिशु की तरह पापों से शुद्ध हो जाता है (12)
4. हज और उमरा में अनुवर्ती करने से गरीबी, दरिद्रता और पाप खत्म हो जाते हैं (13)
5. हज पिछले सभी पापों को मिटा देता है। (14)
6. हज और उमरा करने वालों की दुआएं कबूल होती हैं. (15)
7. हज और उमरा करना महिलाओं, कमजोर, बूढ़े और बच्चों का जिहाद है। (16)
8. रमजान में उमरा का सवाब हज के बराबर है। (17)
9. यदि हज या उमरा के लिए यात्रा करने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है, तो उसके लिए पूरा इनाम लिखा जाता है।



(18)

- (1) सहीह इब्ने माजह : 184
- (2) सूरह अल-तहरीम: 8
- (3) सूरह अल-बकरह: 127
- (4) मुस्लिम: 2581, तिर्मिजी: 2418
- (5) बुखारी: 2738, मुस्लिम: 1627
- (6) सूरह अल-तौबा: 119
- (7) सूरह अल-नूर: 30, बुखारी: 6807
- (8) सहीह अल-जामी: 7882
- (9) सूरह अल-बकरह: 197
- (10) बुखारी: 1773, मुस्लिम: 1349
- (11) बुखारी: 1519, मुस्लिम: 83
- (12) बुखारी: 1521, मुस्लिम: 1350
- (13) तिर्मिजी: 810 सहीह
- (14) मुस्लिम: 121
- (15) इब्ने माजह : 2493, हसन
- (16) बुखारी: 1861, सहीह नसाई: 2463
- (17) बुखारी: 1863, मुस्लिम: 1256
- (18) सहीह अल-तरगीब : 1114



उमरा

कुरान और हदीस के प्रकाश में

एहराम, हज्जे तमत्तु के लिए उमरा जरूरी है इसलिए सबसे पहले उमरा इस तरह से करें।

उमरा करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए:

1. यदि आवश्यक हो तो पहले बाल आदि काट लें, फिर नहाकर शरीर पर इत्र लगा लें। (1)

2. इहराम, बांधने का मतलब है कि पुरुषों को अपने शरीर से सभी सिले हुए कपड़े उतारकर एक एप्रन (बिना सिला हुआ कपड़ा) पहनना चाहिए और चादर लपेटनी चाहिए।

बेहतर है कि एहराम सफ़ेद और साफ़ हो। महिलाओं को अपने सामान्य लिबास यानी एहराम में ही रहना चाहिए, लेकिन वह लिबास शृंगार, शोहरत और प्रदर्शन से मुक्त होना चाहिए। (2)

पुरुषों को ऐसी चप्पलें पहनने की अनुमति है जो टखने को नहीं ढकतीं।

नोट: (जो लोग हवाई जहाज़ से जेद्दा जा रहे हैं वे हवाई जहाज़ में बैठने से पहले एहराम बांध सकते हैं, लेकिन मीकात पहुंचने के बाद दिल में एहराम का इरादा रखते हुए शब्द कहें। (3)

नोट: इरादा सिर्फ दिल की नियत का नाम है, नमाज़ और इबादत के दूसरे कामों में इरादा दिल से किया जाता है, लेकिन केवल हज और उमरा में दिल के साथ-साथ जीभ से



शब्दों के साथ अदा करना जरूरी है.

(1) सहीह मुस्लिम: - किताब-अल-हज - अध्याय अत-तीबिलिल मुहरिमि इन्दल इहराम - हदीस: 1189, सुनन अल-तिर्मिधि - किताब-अल-हज अन- रसूलिल्लाहि ﷺ - अध्याय मा जाअ फी अल-इगितसालि इन्दल इहराम - हदीस: 830

(2) हज्जत अल-नबी ﷺ - बिन बाज़

(3) मुस्नद अल-शाफई - किताब-अल-हज मिनल मआली : हदीस: 1673





मीकात और नियत

3. मीकात के पास पहुँच कर वह अपने दिल में उमरा की नियत करे और कहे: "अल्लाहुम्म लब्बैक उमरतन" (ऐ अल्लाह मैं उमरा के लिए तैयार हूँ।)

अगर उसने ऐसा नहीं किया और आगे बढ़ गया तो उसे फिदया अदा करनी होगी। (एक बकरी का वध किया जाएगा और मक्का के गरीब लोगों में वितरित किया जाएगा।)

यदि कोई व्यक्ति दूसरों की ओर से उमरा कर रहा है, तो नियत करने के साथ (अल्लाहुम्म लब्बैक उमरतन अन....)

(हे अल्लाह! मैं अमुक व्यक्ति की ओर से उमरा के लिए उपस्थित हूँ) यह कहकर 'अन' के बाद उस आदमी का नाम भी ले. (2)

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय फी अल-इफरादि व अल-किरानि बि अल-हज्जि व अल-उमरति हदीस: 1232

(2) सुनन अबी दाऊद - किताब अल- मनासिक - अध्याय अर-रजुलु यहुज्जु अन गयरिही - हदीस: 1811, सहीह

यदि मक्का पहुंचने में किसी तरह की बाधा का डर हो तो हज और उमरा करने वाले को कहना चाहिए: " अल्लाहुम्म महिल्ली ह्यसु हबसत्नी "

(ऐ अल्लाह! तु जब भी और जहां भी मुझे रोक दे है, वहां मेरे लिए हज और एहराम से बाहर आने और हलाल होने



की जगह होगी) फिर अगर वह मक्का तक नहीं पहुंच सकता है, तो बिना दम दिए हलाल हो जाएगा, यानी एहराम खोल सकते हैं. (1)

यदि यह हज नफ़िल है, तो इस हज की क़ज़ा (दोबारा करना) भी नहीं, लेकिन यदि कोई अनिवार्य हज कर रहा है, तो इससे हज अमान्य नहीं होता है बल्कि भविष्य में जब भी संभव हो हज करना अनिवार्य होगा ।

एहराम पहनने के लिए कोई विशेष नमाज़ नहीं है, लेकिन किसी नमाज़ के बाद एहराम पहन ले तो ये मुस्तहब (अनुशंसित) है। (2)

कुछ विद्वानों ने कहा कि धू अल- हुलैफा (मदीना की मीकात) में दो रकअत नमाज़ पढ़ना मुस्तहब (अनुशंसित) है। यह इहराम की नमाज़ नहीं है, बल्कि यह इस स्थान के विशेष गुण पर आधारित है। वल्लाहु अअ्लम तलबियह

4. एहराम बांधने के बाद ऊंची आवाज में तलबिया पढ़ें।

)लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल हम्द वन-निअ्मत लक वल-मुल्क ला शरीक लक(मैं हाज़िर हूँ, मैं तेरे दरबार में हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ। तेरा कोई साज़ीदार नहीं, मैं हाज़िर हूँ, सारी सिफ़ारिशें तेरे लिए हैं, और सारी दुआएँ तुज़ी से हैं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में राज्य तेरा है, तु अकेला हैं, तेरा कोई साथी नहीं है) (3)

(1) सहीह अल-बुखारी - किताब अल-निकाह - अध्याय अल-



अक्फाड़ फी अद-दीन - हदीस: 5089

(2) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज्ज - अध्याय तक्लीदि
अल-हदयि व इश्आरिहि इन्दल इहराम - हदीस: 1243

(3) सहीह अल-बुखारी - किताब अल-हज्ज - अध्याय अल-
तलबियह - हदीस: 1549

तल्बियह की फजीलत:

तल्बियह हज की रस्मों में से एक है, सबसे अच्छा हज वह है जिसमें तल्बियह की गूंज अधिक हो। (1) जब तल्बियह पढ़ने वाला तल्बियह कहता है, तो उसके दाहिनी और बायीं ओर से लेकर धरती के किनारों तक के सभी पत्थर, पेड़ और कंकड़ सब लब्बैक पुकारते हैं, और इस का इनाम तलबियह पढ़ने वाले को दिया जाता है। (2)

पैगंबर ﷺ से तल्बियह की ये दुआएं भी साबित होती हैं:

(1) (लब्बैक इलाहल-हक्क) (3) (हे सच्चे ईश्वर मैं उपस्थित हूं)

और पैगम्बर ﷺ की ओर से तल्बियह के बाद की गई बढ़ोतरी की स्वीकृति और अनुमति साबित होती है:

(2) (लब्बैक ज़ल-मआरिजि लब्बैक ज़ल-फवाज़िलि) (2)
अनुवाद: मैं उपस्थित हूं, हे ऊंचाईयों और महानता वाली ज़ात ।

(3) (लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक लब्बैक व सअदकैक वल-खयरु फी यदकैक लब्बैक वर-रग़बाउ इलय्क वल-अमलु) (5)



अनुवाद: मैं उपस्थित हूं, हे अल्लाह, मैं उपस्थित हूं, मैं आपकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए उपस्थित हूं, सभी अच्छी चीजें आपके हाथों में हैं, मैं उपस्थित हूं, और इच्छा और कार्रवाई आपकी ओर है।

महिलाओं के लिए ज़ोर से तलबिया कहना भी जायज़ है (इतनी कि पास में रहने वाली महिला इसे सुन सके) (6)

(1) सुन्नन अल-तिर्मिज़ी - हज के अध्याय - अध्याय मा जाअ फी फज़िलत-तल्बियति वन-नहरि - हदीस: 827

(2) सुन्नन इब्ने माजा - किताब अल- मनासिक - अध्याय अत-तल्बियति - हदीस: 2921, सहीह

(3) सुन्नन अल-नसाई: 2752

(4) बयहकी : 9299, मनासिकुल-हज्जि वल-उमरति लिल-अल्बानी:15

(5) मुस्लिम 8-:1184

(6) मुस्नद अहमद बिन हम्बल-मुस्नद अल-अन्सार -मुस्नद अन-निसा-हदीस उम्मि सलमा ज़व्जिन-नबिय्यी हदीस: 26693:सहीह



मक्का में प्रवेश

5. जैसे ही आप मक्का की आबादी देखें, तल्बियह को बंद कर दें। (1)

यदि कोई दिन के दौरान मक्का में प्रवेश करने की कोशिश करता है (2) या सनिय्या उल्या (बाबु अल-मअल्लात) से प्रवेश करने और बाब बनी शीबा के स्थान से पवित्र मस्जिद में प्रवेश करने की कोशिश करता है, तो पैगंबर की ओर से इसके लिए निश्चित रूप से गुंजाइश है, लेकिन यह अनिवार्य नहीं है। इसलिए खुद भी परेशानी में न पड़ें और दूसरों को भी परेशानी में न डालें।

मक्का या मस्जिद हराम में जहां भी सुविधाजनक हो वहां से प्रवेश किया जा सकता है। (3)

(1) अल-अल्बानी मनासिकुल-हज्जि वल-उमरति : 20

(2) सहीह अल-बुखारी - किताबुल-हज्जि - अध्याय दुखूलि मक्कति नहारन व लयलन - हदीस: 1574

(3) सहीह अल-बुखारी - किताब अल-हज्ज - अध्याय: मिन अय्न यदखुलु मक्कत? - हदीस: 1576

मस्जिद हराम

6. तवाफ़ से पहले वजू करें। (1)

7. मस्जिद हराम में प्रवेश करते समय सबसे पहले दाहिनी ओर कदम रखें और यह दुआ पढ़ें:



(अऊजुबिल्लाहिल-अजीमि वबिवज्हिल करीमि
वबिसुल्तानिहिल कदीमि मिनश-शय्तानिर रजीमि)

(मैं सर्वशक्तिमान अल्लाह, उसकी कृपा वाली ज्ञात और
उसकी ताकत द्वारा, मैं अस्विकारे हुए शैतान से शरण
चाहता हूँ)।

(बिस्मिल्लाहि वस-सलामु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़िफर
ली जुनूबी वफ्तह ली अब्बाब रहमतिक)

(मैं अल्लाह के नाम पर मस्जिद में प्रवेश करता हूँ और
अल्लाह के दूत को सलाम भेजता हूँ, हे अल्लाह! मेरे पापों
को क्षमा कर दो और मेरे लिए अपनी दया के दरवाजे खोलो)
और जाते समय यह दुआ पढ़नी चाहिए:

(बिस्मिल्लाहि वस-सलामु अला रसूलिल्लाहि अल्लाहुम्मग़िफर
ली जुनूबी वफ्तह ली अब्बाब फज़्लिक)

(अल्लाह के नाम पर और अल्लाह के दूत को सलाम भेजते
हुए, मैं मस्जिद छोड़ देता हूँ, हे अल्लाह! मेरे पापों को क्षमा
कर दो और मेरे लिए अपनी कृपा के द्वार खोल दो) (3)

(1) सुन्नन तिर्मिज़ी: 960, सहीह

(2) सुन्नन अबी दाऊद - किताब अल-सलात - अध्याय फीमा
यकूलुहुर-रजुलु इन्द दुखूलिहिल-मस्जिद - हदीस: 466, सहीह

(3) सुन्नन इब्ने माजा - किताब अल-मसाजिदि वल-जमाआत
- अध्याय अद-दुआइ इन्द दुखूलिल-मस्जिदि - हदीस 632,
सहीह



परिक्रमा (तवाफ)

तवाफ में इस बात का ध्यान रखें कि आप दूसरों को तकलीफ न पहुंचाएं, खासकर हजरे अस्वद को चुंबन करते समय या छूते समय।

तवाफ शुरू करने से पहले शॉल का हिस्सा दाएं (Right) कंधे के नीचे से निकालकर बाएं (Left) कंधे पर रखें। (इज्तिबाअ की हालत अपनाएं) (1)

तवाफ की शुरुआत हजरे अस्वद को छूकर (दाहिने हाथ से) या इशारे से (इस्तिलाम करके) करें। (2)

काबा की ओर देखते हुए परिक्रमा(तवाफ) करना और दुआ करना जायज़ है। (3)

हजरे अस्वद (काला पत्थर)

ध्यान दें: हजरे अस्वद को चूमना और यदि संभव हो तो उस पर माथा लगाना जायज़ है। हां, अगर लोगों की भीड़ के कारण छूना मुश्किल हो तो हाथ से इशारा करें। लेकिन इशारा करते समय हाथ को चूमें नहीं और इशारा करते समय दोनों हाथ न उठाएं (रफ अल-यदैन की तरह), बल्कि दाहिने हाथ को हजरे अस्वद की ओर इशारा करें। (5)

(1) सुन्नन अबी दाऊद - किताब अल-मनासिक - अध्याय अल- इज्तिबाअ फीत-तवाफि - हदीस: 1884

(2) सुन्नन अल-तिर्मिज़ी - किताबुल हज्जि अन-रसूलिल्लाह ﷺ - अध्याय मा जाअ कयफत-तवाफ - हदीस: 856



(3) सुनन इब्ने माजा: 3932, सहीह अल-तरगीब अल-अल्बानी: 2441

(4) इरवा अल-गलील: 1112

(5) अल-मुस्तद्रक अल अल-सहीहैन हाकिम- किताब अल-मनासिक - हदीस: 1672

नोट: काबा देखते ही हाथ उठाकर दुआ करनी चाहिए और यह दुआ सहाबी से साबित होती है।

(अल्लाहुम्म अन्तस्-सलामु व मिन्कस-सलामु, फहय्यिना रब्बना बिस्-सलाम)

(हे अल्लाह! आप सर्व-शांतिपूर्ण हैं, और आपसे शांति है। इसलिए, मेरे अल्लाह! हमें मन और शरीर की शांति के साथ जीने का अवसर दें) (1)

(1) मुसनद अल- शाफई - किताब अल-मनासिक - हदीस: 5878.

हजरे अस्वद को छूते या उसकी ओर इशारा करते हुए (अल्लाहु अकबर या बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर) कहें। (1) गुण : हजरे अस्वद और यमनी शिला को छूने से पाप धुल जाते हैं।

क्यामत के दिन, अल्लाह एक हजरे अस्वद लाएगा, उसकी दो आँखें होंगी जिनसे वह देखेगा और एक जीभ होगी जिससे वह बोलेगा, और उस व्यक्ति के पक्ष में गवाही देगा जिसने इसे सत्य के साथ प्राप्त किया है। (3)



हजरे अस्वद स्वर्ग से भेजा गया एक पत्थर है, यह बर्फ से भी अधिक सफ़ेद था लेकिन आदम के बच्चों के पापों के कारण काला हो गया। (4)

रुकने यमानी

9. रुकने यमानी को केवल स्पर्श करें, चुंबन न करें, यदि छूना संभव न हो तो इशारा किए बिना निकल जाएं। (5)

10. रुकने यमानी और हजर असवद के बीच यह दुआ पढ़ें:
(रब्बना आतिना फिद-दुन्या हसनतंव व फिल-आखिरति हसनतंव व किना अज़ाबन-नार)

(हे हमारे पालनहार! हमें इस दुनिया में अच्छाई प्रदान करें और हमें इसके बाद भी अच्छाई प्रदान कर और हमें नरक की आग से बचाएं)

और बाकी तवाफ में कुरान या प्रामाणिक हदीसों में से जो भी दुआ याद हो उसे पढ़ना मसनून है। (6)

(1) मुसनद अहमद इब्ने हनबल - मुसनद बनी हाशिम - मुसनद अब्दुल्ला इब्न उमर - हदीस 4628

(2) सहीह इब्ने खुज़ैमा - किताब अल- मनासिक - अध्याय जुम्माउ अब्बाबि ज़िकरी अफ्आलि इख्तलफ अन्नासु फी इबाहतिहि लिल-मुहरिमि- फज़्लु इस्तिलामिर- अध्याय रुकनैनि व ज़िकरि हतिल-खताया बिमस्हिहा -हदीस: 2729

(3) सुनन अल-तिर्मिज़ी: 961

(4) सुनन अल-तिर्मिज़ी - किताब अल-हज्जि अन-



रसूलिल्लाहि ﷺ से हज की किताब - अध्याय मा जाअ फी फज़िल-हजरिल-अस्वदि वर-रुकिन वल-मकामि, हदीस: 877

(5) बुखारी: 1644

(6) सुन्न अबी दाऊद - किताब अल- मनासिक - अध्याय अद-दुआइ फित-तवाफि - हदीस: 1892

नोट: तवाफ के लिए कोई विशेष दुआ नहीं है।

तवाफ के दौरान बातचीत करना जायज़ है लेकिन अनावश्यक बातचीत से बचें, इबादत पर ध्यान दें।

अगर कोई महिला मासिक धर्म की स्थिति में है तो उसे तवाफ नहीं करना चाहिए।

नमाज़ का एक लाख सवाब मस्जिदे हराम के पास खास है (2)

मक्का की हर मस्जिद में एक जैसे सवाब की कल्पना करने में सावधानी बरतनी ज़रूरी है। (3)

11। पुरुषों को तवाफे कुदुम की पहली तीन परिक्रमाएँ तेज़ (रमल) करनी चाहिए, और शेष चार परिक्रमाएँ सामान्य रूप से करनी चाहिए। महिलाओं को तेज़ नहीं चलना चाहिए।

12. काबा के दरवाजे और हजरे अस्वद के बीच के क्षेत्र को मुल्तज़म कहा जाता है। पैगंबर ﷺ और उनके साथियों से यह साबित हुआ है कि काबा के इस हिस्से को अपने चेहरे, दोनों हाथों और छाती से छूकर यहां दुआ करें। (5)

13. इसी तरह काबा के सात चक्कर पूरे करें।



तवाफ़ के प्रत्येक दौर में, यदि संभव हो तो, उसे हजरे अस्वद का का इस्तिलाम करे या दूर से इशारा करके उसे पार करना चाहिए। (7)

सातवां चक्र पूरा करने के बाद जब आप हजरे अस्वद के पास आएँ तो आपको तकबीर और हजरे अस्वद इस्तिलाम करना चाहिए। (8)

(1) फतावा अल-शेख अल-अल्बानी - सिल्सिलतिल-हदयि वन-नूर: शरीत की संख्या: 623

(2) सुनन इब्न माजा: - किताब इकामत सलात वल सुन्नत फिहा - अध्याय मा जाअ फज़लुस-सलाति फिल-मस्जिदिल-हरामि व मस्जिदिन-नबी: 1406

(3) फतावा इब्न उसैमीन: 12/395

(4) सुनन अल-तिर्मिज़ी - किताबुल हज्जि अन-रसूलिल्लाह ﷺ - अध्याय मा जाअ कयफत-तवाफ - हदीस: 856

(5) अल-अहादीस अस-सहीहह: 2138

(6) सुनन अल-तिर्मिज़ी - किताबुल हज्जि अन-रसूलिल्लाह ﷺ - अध्याय मा जाअ कयफत-तवाफ - हदीस: 856

(7) सुनन अबी दाऊद - किताब अल- मनासिक - अध्याय इस्तलाम अल-अरकान - हदीस: 1876

(8) अल-लजनतु अद-दाइमतु लिल-बुहूसिल-इल्मिय्यति वल-इफ्ता: 11/224



मक़ामे इब्राहीम

14. सात चक्र पूरे करने के बाद

(वत-तख़िज़ु मिम-मक़ामि इब्राहिम मुसल्ला)

(और मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ का स्थान बनाएं।) पढ़ते हुए मक़ाम इब्राहीम की ओर आएँ और वहाँ (या जहाँ भी जगह मिले) दो रकअत नमाज़ पढ़ें।

पहली रकअत में (कुल-या अय्युहल-काफिरुन) और दूसरी रकअत में (कुल-हुवल्लाहु अहद) पढ़ें, (इसके अलावा कोई अन्य सूरह या आयत पढ़ने में कोई नुकसान नहीं है) (2) ज़मज़म

15. नमाज़ के बाद ज़मज़म (उसी जगह खड़े हो कर) पियें और थोड़ा सिर पर लगाएं, बैठकर भी पीना जायज़ है।

16. ज़मज़म पीने के बाद, व्यक्ति को हजरे अस्वद का इस्तिलाम करना और सई के लिए सफ़ा पर्वत पर जाना चाहिए। (4)

सई

17. सफ़ा पर्वत पर चढ़ते समय इसे पढ़ें: (इन्नस-सफ़ा वल-मरवत मिन-शआइरिल्लाह फमन-हज्जल-बय्त अविअ- तमर फला जुनाह अलयहि अंय-यत्तव्वफ बिहिमा वमन-ततव्वअ खयरन- फइन्नल्लाह शाकिरुन-अलीम)

(याद रखें कि सफ़ा और मरवा पहाड़ियाँ अल्लाह की निशानियों में से दो निशानियाँ हैं, इसलिए जो कोई अल्लाह के घर के लिए हज या उमरा करेगा, उसकी परिक्रमा करने



में कोई पाप नहीं है। और जो कोई नफली कर्म करेगा, अतः अल्लाह अति आभारी और सर्वज्ञ जानकार है। (और फिर ये शब्द कहें: (अब्दउ बिमा बदअल्लाहु बिहि) (मैं उससे शुरू करता हूँ जिससे अल्लाह तआला ने शुरुआत की है।) (5)

(1) सुन्न अल-तिर्मिज़ी - किताबुल हज्जि अन-रसूलिल्लाह
ﷺ - अध्याय मा जाअ कयफत-तवाफ - हदीस: 856

(2) सुन्न अल-तिर्मिज़ी - किताबुल हज्जि अन-रसूलिल्लाह
ﷺ - अध्याय मा यकरउ फी रक्अतै अत-तवाफि: हदीस 869

(3) (4) मुसनद अहमद बिन हमबल - मुसनद बनी हाशिम -
मुसनद जाबिर बिन अब्दुल्ला - हदीस: 15243

(5) सहीह मुस्लिम - किताबुल हज्जि - अध्याय हज्जत अल-
नबी - हदीस: 1218

18. सफ़ा पहाड़ी पर चढ़ने के बाद क़िबला की ओर मुंह करके तीन बार "अल्लाहु अकबर" कहें, फिर इन शब्दों को तीन बार पढ़ें:

(ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु लहुल मुल्कु व लहुल-हम्दु युहयी व युमीतु व हुव अला कुल्लि शयइन कदीर, ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु अन्जज़ वअ्दहु व नसर अब्दहु व हज़मल-अहज़ाब वहदहु)

(अल्लाह के अलावा कोई इबादत के लायक नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साथी नहीं है, उसका राज्य है, सारी प्रशंसा उसी की है, उसे हर चीज पर अधिकार है। उसके अलावा कोई सच्चा इबादत के लायक नहीं है। हाँ, वह एकमात्र



है, केवल वही जिसने अपना वादा पूरा किया, अपने विश्वासी बंदे (मुहम्मद ﷺ) की मदद की और उसका समर्थन किया और उन लोगों को हराया जिन्होंने उसके धर्म का विरोध किया था।

सफा और मर्वा के बीच अच्छी तरह से दुआएं करनी चाहिए।

(1)

पहली बार सफा और मर्वा पर पहली आयत पढ़ें और बाकी केवल दुआ पढ़ें। (2)

19. सफा से सई शुरू करनी चाहिए और मर्वा पहाड़ी पर जाकर ऊपर दिए गए नंबर 18 की प्रक्रिया को दोहराना चाहिए। (3)

20. सज्जन हरे (Green) चिन्ह के बीच तेजी से चलें (महिला नहीं) (4)

(1) सहीह मुस्लिम - किताबुल हज्जि - अध्याय हज्जत अल-नबी - हदीस: 1218

(2) अश-शरहुल मुम्तिअ अला ज़ादिल - मुस्तक्निअ लि-इब्नि उथैमीन

(3) सहीह मुस्लिम - किताबुल हज्जि - अध्याय हज्जत अल-नबी - हदीस: 1218

(4) मुसनद अल- शाफई - किताब अल- मनासिक - हदीस: 611

21. सफा से मरवा तक एक चक्कर गिनें और इस तरह सात चक्कर पूरे करें।



नोट: इस प्रकार मर्वा से सफा तक दूसरे चक्र की गिनती होगी, सातवां चक्र मर्वा पर समाप्त होगा।

22. सई के दौरान, जो भी कुरान या सही अहादीस की दुआएं आपको याद हों, उन्हें पढ़ते रहें, या सही दुआओं की किताब में देखें और उन्हें पढ़ें।

सई के लिए वुजू ज़रूरी नहीं।

सई में, इस प्रार्थना की पुष्टि कुछ सहाबा द्वारा की गई है:

(रब्बिग़िफ़र वर-हम इन्नक अनतल-अअज़्जुल-अकरम)

(हे मेरे रब! मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, क्योंकि तू परम सम्माननीय है। (4)

तवाफ, सई आदि के समय देखा गया है कि लोग कैमरे से तस्वीरें लेते हैं। याद रखें यादगार तस्वीरें लेना नाजायज़ है और हरम का अपमान है।

अगर तवाफ़ और सई के दौरान वाजिब (फ़र्ज़) नमाज़ शुरू हो जाए तो तवाफ़ और सई छोड़ कर नमाज़ में शामिल हो जाना चाहिए।

हलक़ और तक़सीर

23. सई के बाद, पुरुषों को अपने पूरे सिर के बाल काटना या मुंडवाना चाहिए और महिलाओं को अपने बालों का एक पोर बाल काटना चाहिए। (5)

उमरा और हज यात्री एक-दूसरे के बाल काट सकते हैं, इसी



तरह महिलाएं मरवाह पहाड़ी पर या घर आकर एक-दूसरे के बाल एक पोर की सीमा तक काट सकती हैं।)

महिलाओं को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उनके बाल कोई गैर महरम न काटे, कोई महरम ही बाल काटे या महिला खुद काटे।

24. फिर इहराम की चादरें उतार दें और सामान्य कपड़े पहन लें। (6)

अल्लाह ने चाहा तो इस तरह उमरा कुरान और सुन्नत के मुताबिक मुकम्मल हो जाएगा।

(1) सहीह इब्न खुज़ैमा - किताब अल- मनासिक - अध्याय अल-मशयी बय्न्स-सफा वल-मरवति खला अस-सअय फी बत्निल-वादी फकत - हदीस: 2760

(2) अल-लजनतु अद-दाइमतु लिल-बुहूसिल-इल्मिय्यति वल-इफ्ता: 11/224

(3) सहीह इब्न खुज़ैमा - किताब अल- मनासिक - अध्याय जुम्माउ अब्बाबि ज़िकरी अफ्आलि इख्तलफ अन्नासु फी इबाहतिहि लिल-मुहरिमि- - अध्याय इस्तिहबाबि ज़िक्रिल्लाहि फित-तवाफ - हदीस 2738

(4) मुसन्नफ इब्न अबी शैबा - किताब अल-हज्ज - मा यकुलुर-रजुलु फिल-मस्आ - हदीस: 15807

(5) सुनन अल-नसाई - किताब अल- मनासिक - अल-हादी कविताएँ - इश्आरु अल-हदयि -अय्न यक्सिरु अल मुअ्तमिरु - हदीस: 2987



(6) सहीह मुस्लिम: किताब अल-हज - अध्याय बयानु
वुजुहिल-इहरामि - हदीस: 1211





हज्ज

कुरान तथा सुन्नत के अनुसार

हज्ज के तीन प्रकार हैं :

(1) हज्जे तमत्तुअ (2) हज्जे किरान (3) हज्जे इफ़्राद
नोट : सामान्य प्रकार से हिन्दुस्तानी (हुज्जाज) हज्ज करने वाले, हज्जे तमत्तुअ ही करते हैं, इसलिए इस पुस्तक में हज्जे तमत्तुअ के नियम ही व्याख्या की गयी हैं।

स्थान / दूरी

जद्दा हवाईअड्डे से मक्का मुकर्रमा 80 किलोमीटर
मक्का मुकर्रमा से मिना 8 किलोमीटर
मिना से अरफा 16 किलोमीटर (पैदल जाने के लिए 4 से 5 घंटे लगते हैं)

अरफा से मुज्दलिफा 9 किलोमीटर (पैदल जाने के लिए 3 घंटे लगते हैं)

मुज्दालिफा से मिना 7 किलोमीटर (पैदल जाने के लिए 2 घंटे लगते हैं)

मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनक्वरा 450 किलोमीटर
हज्जे तमत्तुअ के लिए उमरह करना आवश्यक है। इसलिए नीचे बताये गए प्रकार से पहले उमरह करे फिर इहाम खोल दे।

हज्जे तमत्तुअ का तरीका (रीत) नीचे दिया गया है :
नियत (मंशा) हज्ज



8 झुल हज्जह

1. 8 झुल हज्जह (यव्मुत तर्वियह) को मक्का मुकर्रमा में अपने रहने के स्थल से हज्ज के लिए इहाम बांधना.(1)
2. इहाम बाँधने से पहले स्नान करे तथा अपने शरीर पर खुशबू लगाये. (2)

नोट : इहाम के वस्त्र पर खुशबू ना लगाये एवं स्त्री अपने वस्त्र तथा शरीर पर खुशबू ना लगाये.

3. फिर हज्ज की निय्यत करते हुए इस तरह कहे :
(अल्लाहुम्म लब्बैक हज्जन)

(ऐ अल्लाह ! मैं हज्ज के लिए उपस्थित हूँ) (3)

(1) सहीह मुस्लिम- किताब अल-हज्जि -हज और उमरा- हदीस का अध्याय: 1184

(2) सुनन अल-तिर्मिधि - किताब अल-हज्जि अन-रसूलिल्लाहि ﷺ - अध्याय मा जाअ फी अल इग्तिसालि इन्दल- इहराम - हदीस: 830

सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज्जि - अध्याय अत-तीबि लिल- मुहरिमि-

इन्दल इहराम - हदीस: 1189

(3) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय फिल-इफरादि वल-किरानि बिल-हज्जि वल-उमरति हदीस :1232



4. ऊंची आवाज़ से तल्बियह कहे : (लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक इन्नल हम्द, वन निअ्मत लक वल मुल्क ला शरीक लक) (मैं उपस्थित हूँ, ऐ अल्लाह ! मैं तेरे सामने उपस्थित हूँ, मैं उपस्थित हूँ. तेरा कोई शरीक नहीं है, मैं उपस्थित हूँ, सारी कीर्तना (तारीफें) तेरे लिए है, तथा सारी उपलब्धियां तेरे ही ओर से है, सारे विश्व में तेरा ही राज है, तू अकेला है, तेरा कोई समान नहीं है).

(1)

5. एक बार ये शब्द कहे : (अल्लाहुम्म हज्जतुन ला रियाअ फीहा वला सुमअह) (ऐ अल्लाह ! हज्ज से दिखावा करना नहीं है, ना प्रसिद्ध होना है). (2)

मिना

6. फिर मिना पहुंच कर जुहर की नमाज़ पढ़े, सारी नमाज़ें उसके समय पर कसर के साथ पढ़े.

(1) सहीह अल-बुखारी - किताब अल-हज - अध्याय तलबियह - हदीस: 1549

(2) सुनन इब्न माजा - किताब अल- मनासिक - अध्याय अल-हज्ज अलर-रहलि - हदीस: 2890

(3) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय हज्जतुन-नबी ﷺ - हदीस: 1218



अरफा

9 झुल हज्जह

(7) 9 झुल हज्जह (यच्मेअरफा) को सूर्यास्तमय के पश्चात तकबीर (अल्लाहु अकबर) तथा तहलील (ला इलाह इल्लल्लाह) तथा तल्बिया कहते हुए मिना से अरफा के लिए निकल जाए. (1)

फज़ीलत : अरफा के दिन से बड़ा कोई ऐसा दिन नहीं, जिसमें लोगों को नरक से निकाल कर स्वेच्छा दी जाती है (2). और अल्लाह तआला पास होता है, फिर उन हाजियों का प्रस्ताव फरिशतों से गर्व से करता है तथा पूछता है, बताव ये लोग यहाँ क्यों आये हैं. (3)

निश्चय अल्लाह तआला, आसमान वालों से अरफा में उपस्थित लोगों का गर्व से प्रस्ताव करता है और कहता है, देखो ! मेरे सेवक आये हैं. (4)

(8) हाजियों के लिए अरफा के दिन उपवास रखना उचित है, क्यों के शैख अल्बानी ने उपवास रखने से मना करने वाली हदीस को ज़ईफ़ (अप्रमाणित) कहा (5), परन्तु मुस्तहब (बेहतर) ये है के उपवास ना रखे तो अरफा के दिन हाजी को प्रार्थना (इबादत) में आसानी होगी. एवं सहीह मुस्लिम में उपवास ना रखने को मुस्तहब (बेहतर) प्रमाणित करते हुए इस तरह बाब (विषय) बनाया गया है, "अरफा के दिन, मैदाने अरफात में हाजियों के लिए उपवास ना रखना बेहतर



हैं. (6)

(9) मैदाने अरफात में प्रवेश होने से पहले यदि उपलब्धी हो तो वादी निमरह में ठहरे, फिर जुहर के समय मैदाने अरफात में इमामे हज्ज का खुत्बा सुने, उसके उपरांत जुहर तथा असर की दो नमाज़ एक अज्ञान एवं दो इक़ामत के साथ बा जमाअत (सबसे मिलकर) क़सर (दो दो रकात करके) पढ़े. (7) वादी निमरह में ठहरना तथा मस्जिद निमरह में आना उपलब्ध ना हो तो अपने खैमो (जहां ठहरे) जुहर के समय जुहर तथा असर की दोनों नमाज़ एक अज्ञान और दो इक़ामत के साथ बा जमाअत (सबसे मिलकर) पढ़े.

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय अत-तल्बियति वत-तकबिरि फिज़-ज़हाबि मिम-मिना इला अरफात फी यत्मिन - हदीस: 1284

(2) सहीह अल-तर्घिब: 129/2

(3) मुसन्द अहमद: 12/42

(4) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - हज और उमरा के गुणों पर अध्याय - हदीस: 1348

(5) अल- सिलसिलतु अल-ज़ईफह वल-मौज़ूअह : 404

(6) सहीह मुस्लिम - उपवास की किताब - अध्याय इस्तिहबाबि अल-फितरि लिल-हाज्जि बि अरफात यत्म अरफह - हदीस: 1123

(7) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - पैगंबर के हज का अध्याय ❷ - हदीस: 1218



(10) जुहर और असर की पढ़ने के उपरांत अरफा में प्रवेश होना तथा जबले अरफा (जबले रहमत) के पास (या जहाँ कहीं जगह मिले) वुकूफ करना, क़िबला की तरफ खड़े होकर हाथ उठाकर कुरान तथा नबवी दुआएं माँगना और बीच में तकबीर एवं तलबिया भी कहना चाहिए.(1)

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - पैगंबर के हज का अध्याय ﷻ - हदीस: 1218

सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय अत-तलबियति वत-तकबिरि फिज़-ज़हाबि मिम-मिना इला अरफात फी यत्मिन - हदीस: 1284

❖ उस दिन इस दुआ को पढ़ना चाहिए, क्यों के ये पूर्व अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और आप ﷺ की सुन्नत है

(ला इलाह इल्लल्लाहू वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्क व लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन कदीर)

(अल्लाह तआला के सिवा कोई पूजा के योग्य नहीं है, वो यकता है तथा अकेला है, उसका कोई समान नहीं है, इस विश्व पर राज उसी का है, सारी प्रशंसाएं उसी के लिए है एवं हर चीज़ पर कुदरत रखता है).(1)

तथा ये दुआ भी प्रमाणित है :

(इन्नमल खैरु खैरुल आखिरह) (निश्चय भलाई (पुण्य) तो अंतिम दिन की भलाई (पुण्य) है).(2)



लेकिन जिनको देर हो गयी अगर दस तारीख को फजर से पहले मैदान अरफात पहुच जाए तो उनका रुकन भी अदा हो जाएगा.

मस्जिदे निमरह में इमाम के साथ नमाज़ ना मिले तो अकेले या जमाअत बनाकर नमाज़ पढ़ी जा सकती है.

8 झुल हज्जह तथा 9 झुल हज्जह के बीच की रात में मिना में ठहरना ज़रूरी नहीं, लेकिन सुन्नत है, परंतु साधारण समझ कर छोड़ ना देना.(3)

(1) सुनन अल-तिर्मिधि - किताब अल- दअ्वाति अन रसूलिल्लाहि ﷺ - अध्याय फी दुआइ यत्मि अरफह - - हदीस: 3585

(2) सहीह इब्न खुज़ैमा - किताब अल-मनासिक - जुम्माउ अब्बाबि ज़िकरि अफआलिन इख्तलफ अल-नासु फी इबाहतिहि लिल-मुहरिमि- अध्याय अल-ज़ियादति अला अत-तल्बियति फील-मौक्रिफि बि अरफत बि अन्न अल-खैर- हदीस: 2831

(3) अल-अल्बानी द्वारा हज और उमरा के अनुष्ठान: 29, फतवा महशूर आल सलमान

मुज्दलिफह

(11) सूरज डूबने के बाद नमाज़ मगरिब पढ़े बिना शांति के साथ तल्बिया कहते हुए मुज्दलिफह चले जाए.(1)

❖ अरफा से निकलते समय बेहतर होगा के वजू करके



निकले, लेकिन मुज्दलिफह आधी रात (12 बजे) तक भी ना पहुंच पाए तो रास्ते में ही मगरिब एवं इशा की नमाज़ पढ़े.

(12) मुज्दलिफह पहुंच कर मगरिब एवं इशा की नमाज़ एक अज्ञान और दो इकामत के साथ क़सर पढ़े.(2)

(13) रात में आराम करते हुए गुज़ारे तथा 10 झुल हज्जह की फजर की नमाज़ साधारण समय से थोडा पहले (यानी फजर का समय आरम्भ होते ही) पढ़े.(3)

(14) फजर की नमाज़ बा जमाअत (सबके साथ मिलकर) पढने के उपरांत मश्अरुल हराम पहाड़ी के पास में (या जहां भी जगह पाए) क़िबला की तरफ खड़े होकर हाथ उठाकर सूर्योदय से पहले खूब प्रकाश आने तक तकबीर एवं तहलील पढ़े, तौबा एवं इस्तिग़फ़ार (पश्चात्ताप) करे तथा दुआ (प्रार्थना) करना चाहिए.(4)

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय हज्जत अल-नबी ﷺ - हदीस: 1218

(2) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय पैगंबर ﷺ का हज - हदीस: 1218

(3) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय पैगंबर का हज ﷺ - हदीस: 1218

(4) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय पैगंबर ﷺ का हज - हदीस: 1218

(15) सूर्योदय से पहले शांति के साथ तल्बिया पढ़ते रहे,



मिना जाना तथा रास्ते में वादी मुहस्सर से तेजी से जाना चाहिए.(1)

- ❖ अस्वस्थ स्त्री तथा बूढ़े तथा अपंगत लोगो के लिए आधी रात के उपरांत भी मुज्दलिफह से मिना जाना उचित है, लेकिन कंकरियाँ सूर्योदय के पश्चात ही मारना चाहिए (अल्बानी).(2) एक उल्लेख के प्रकार सूर्योदय से पहले कंकरियाँ मारना उचित है, अस्मा रज़िअल्लाहुअन्हा के कर्म और समझ के प्रकार प्रमाणित (इब्ने उसैमिन).

नोट : ऐसे विषयो में सावधानी बेहतर है, मतभेद से बाहर निकलने क रास्ता ये है के सूर्योदय के पश्चात कंकरियाँ मारी जाए (राकिम अल हुरूफ)

(1) सुनन अल-तिर्मिधि - अल्लाह के पैगंबर पर हज की किताब ﷺ, अध्याय मा जाअ फिल इफाज़ति मिन-अरफात-हदीस: 886

(2) बुखारी: 1676, मुस्लिम: 1295



मिना

(16) 10 झुल हज्जह को मुज्दलिफह से मिना पहुंचे, मुज्दलिफह से निकलते समय अपने हाथ में कंकरियाँ लेले या मिना के मैदान से भी ले सकते हैं जिनका size चने के दाने से कुछ बड़ा हो.

नोट : कंकरियो को धोना बिदत है.

मजबूर इंसान कंकरियाँ मारने के लिए दूसरों को अपनी जगह भेज सकता है.

दस (10) झुल हज्जह को ये चार काम करना है :

1. रम्यी
2. कुरबानी
3. हलक़ या तक़सीर
4. तवाफ़े इफ़ाज़ा एवं सई

(17) (1) रम्यी सूर्योदय के पश्चात जमरह की तरफ मुड़ कर मिना, सीधे हाथ की तरफ और मक्का, बाएं तरफ रहे (मुस्लिम) बड़े जमरे को एक एक करके सात कंकरियाँ अल्लाहु अकबर कहते हुए मारना चाहिए तथा उसके पश्चात तल्बिया बंद करदे एवं सूर्योदय से पहले कंकरियाँ मारना उचित है (तिरमिज़ी) लेकिन ज़वाले आफताब (दोपहर) के पश्चात रात तक कंकरियाँ मारना उचित है.(1)

- ❖ जमरात को सिर्फ कंकरी मारे, दूसरी चीज़ों से ना मारे, ऐसा करना ग़लत है, पास जाकर मारिये, कंकरी कुंवां जैसे गढ़े में गिरना काफी है. इसमें लगे हुए



कपडे को लगना आवश्यक नहीं.

(1) बुखारी - हज्जत अल-नबी- अल-अल्बानी पृष्ठ 80
सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय पैगंबर ﷺ
का हज - हदीस: 1218

(18) (2) कुरबानी जमरह उक्बा की रमयी (कंकरियाँ मारना) के पश्चात कुरबानी करे तथा हो सके तो उस से कुछ पकाएं.(1)

इस गोश्त (मांस) में गरीब लोगों का ध्यान रखे.

“इनमे से खाओ तथा किनात से बैठे रहने वालों एवं पूँछने वालों को भी खिलाओ”(2) ऊँट तथा गाय में सात लोग मिल सकते हैं. हदयी के पशु की संभावना ना हो तो हज के दिनों में तीन उपवास तथा घर आने के पश्चात सात उपवास रखे.(3)

❖ हदयी के लिए अल राजिही bank में या प्रशासन के द्वारा निर्देशित किये गए संगठन में पैसे जमा कर सकते हैं.

(19) (3) हलक़ या तक्सीर, कुरबानी के पश्चात हलक़ (सिर के केश मुंडवाना) या तक्सीर (hair cutting) कराये एवं इहाम का वस्त्र उतार कर साधारण वस्त्र पहन लें. हलक़ बेहतर और तक्सीर उचित है तथा हलक़ या तक्सीर हाजी की सीढ़ी तरफ से प्रारंभ करे.(4)

❖ स्त्री अपने सिर के केश अंतिम किनारे से पकड़ कर एक पोर काट ले.(5)



(20) (4) तवाफे इफ़ाज़ा एवं सई, मिना से मक्का मुकर्रमा जा कर करे (इस तवाफे इफ़ाज़ा में इज़ितबा तथा रमल ना करे क्यों के ये प्रमाणित नहीं है, साधारण तवाफ़ के सात चक्कर पश्चात दो रकात नमाज़ प्रमाणित है, इसलिए तवाफे इफ़ाज़ा के पश्चात भी दो रकात नमाज़ पढ़े), ज़मज़म पिए तथा थोडा सिर पर डाल लें, फिर सफा एवं मरवा की सई करे तथा मक्का मुकर्रमा से मिना वापिस आ जाए.(6)

नोट : इन कार्य के आगे या पीछे होने में कोई बात नहीं है, लेकिन तरतीब छोड़ने से दम (बकरा ज़बह करना) आवश्यक नहीं है.(7)

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय बयानु अन्नस-सुन्नत यव्मन-नहरि अंय-यरमिय - हदीस: 1305

सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - पैगंबर के हज का अध्याय ﷻ - हदीस: 1218

(2) सूरह हज: 36

(3) इरवा अल-ग़लील: 964

(4) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय बयानु अन्नस-सुन्नत यव्मन-नहरि अंय-यरमिय - हदीस: 1305

(5) अल-शरह अल-मुम्तिअ: 7/329

(6) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय हज्जत अल-नबी ﷻ - हदीस: 1218

(7) बुखारी: 1736



नोट : दस तिथि को जमरा कुबरा को कंकरियाँ मार लेने से हाजी पर इहाम की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, केवल हाजी अपनी पत्नी से सम्भोग नहीं कर सकता, लेकिन तवाफ़ तीर्थ यात्रा तथा सई करने के पश्चात पत्नी से सम्भोग करना भी उचित है (शैख अल्बानी).

एक और उल्लेख के प्रकार, दस तिथि के चार कार्य में से कोई दो कार्य करने के पश्चात ही इहाम उतार कर साधारण वस्त्र धारण कर सकता है तथा अंतिम कार्य कर ले तो पत्नी से सम्भोग भी उचित हो जाएगा (शैख बिन बाज़).(1)

देखिये : सावधान की आवश्यकता है के दो कार्य करने के पश्चात ही इहाम खोल दे, क्यों के मतभेद से बचे. अगर किसी ने एक ही कार्य करने के पश्चात इहाम खोल दिया हो या इहाम की आवश्यकता की व्यवस्था ना किया हो तो कोई (कफ़ारा या दम) प्रायश्चित आवश्यक नहीं. क्यों के शैख अल्बानी के पास इहाम खोलने (तहल्लुले अक्वल - इहाम की व्यवस्था से स्वेच्छा) के लिए चार में से एक कार्य काफी है, लेकिन पत्नी से सम्भोग की अनुमति का विषय, चार कार्य करने के पश्चात ही उचित है, इसमें किसी का मतभेद नहीं.

नोट : इस विषय में एक बात पर ध्यान देना के दस झुल हज्जह को कंकरियाँ मारने के पश्चात हाजी इहाम निकाल कर साधारण वस्त्र धारण कर सकते है, अगर रात हो जाए तथा वो तवाफ़े ज़ियारत ना कर सके तो ऐसी परिस्थिति में



फिर इहाम पहन कर तवाफ़ ज़ियारत करे एवं तवाफ़ ज़ियारत के पश्चात इहाम निकाल कर साधारण वस्त्र पहन ले.(2)

नोट : (यदि किसी ने मगरिब के पश्चात इहाम दोबारा नहीं पहना तथा साधारण वस्त्र में ही तवाफ़ ज़ियारत कर लिया तो कुछ विद्वानों के पास ये उचित है क्यों के इहाम दोबारा पहन लेना फर्ज (आवश्यक) नहीं है) वल्लाहु आलम.

(1) हज अल-नबी ﷺ बिन बाज़ - फतवा इब्न बाज़ का संग्रह: 25/233, बुखारी: 1754, मुस्लिम: 1189

(2) हज्जत अल-नबी अल-अल्बानी: 1/78, अबू दाऊद: 1999, बुखारी: 5930, मुस्लिम 1189।

11 झुल हज्जह, 12 झुल हज्जह, 13 झुल हज्जह

11, 12, 13 झुल हज्जह

(21) अय्यामे तशरीक (11,12,13 झुल हज्जह) की रात में मिना में ठहरना तथा उन दिनों में ज़वाल सूर्य के पश्चात जमरा ऊला तथा जमरा वुस्ता तथा जमरा उक्बा की क्रम (order) में रमयी (कंकरियाँ मारना) करना चाहिए.(1)

(22) जमरह ऊला और जमरह वुस्ता को अल्लाहु अकबर कह कर कंकरियाँ मारने (रमयी) के पश्चात क़िबले की ओर होकर, दुआ करना चाहिए लेकिन जमरह उक्बा की रमी के पश्चात दुआ मांगे बिना वापिस पलट आना चाहिए.(2)

❖ जिस हाजी को गिनती में शक आ जाए तो जिस गिनती पर उसे यकीन है उस पर भरोसा करते हुए



बाकी गिनती पूरी करे.

(1) सुनन अबू दाऊद - किताब अल-मनासिक - अध्याय फी रमयील-जिमरि- हदीस: 1973

(2) सुनन नसाई - हज के अनुष्ठानों की पुस्तक - अध्याय अद-दुआउ बअद रमयील-जिमरि - हदीस: 3083, सहीह

(23) मिना में ठहरने के समय हो सके तो रोज़ाना मक्का जा कर तवाफ़ करे. (केवल तवाफ़ करे, सई ना करे).(1) मस्जिद खीफ में बा जमाअत (सबके साथ मिलकर) नमाज़ पढ़े (मस्जिद खीफ में 70 नबियो ने नमाज़ पढ़ी थी)(2) बहुत तहलील एवं तकबीर, हमद एवं सना, तौबा एवं इस्तिग़फ़ार (पश्चाताप) तथा दुआ मांगने की कोशिश करे).(3)

(24) 12 झुल हज्जह को मिना से वापस आना हो तो सूर्यस्तमय से पहले मिना से निकल जाए तथा अगर मिना से निकलने से पहले सूर्यास्तमय हो जाए तो फिर 13 झुल हज्जह को ज़वाल (सूर्य पतन) के पश्चात रमी करके मिना से वापस आना चाहिए.(4)

(1) सुनन अल-कबरा - अल-बैहकी- अध्याय जुम्माउ अब्बाबि वक़तिल-हज्जि वल-उमरति - जुम्माउ अब्बाबि दुखूलि मक्कह - ज़ियारतिल बय्ति कुल्लु लय्लतिम-मिन-लयाली मिना - हदीस: 9066

(2) अल-मुख्तारह - अल-ज़िया अल-मकदिसी, हसन



(3) (4) अल-बकरह : 203

तवाफे विदा

(25) घर जाने से पहले, मक्का मुकर्रमा पहुच कर तवाफ़ विदा करे.(1)

(पहला विचार) कुछ हाजी, हज के पश्चात जिद्दाह इत्यादि जाते है, उनको चाहिए के तवाफ़ विदा करके जिद्दाह जाए, फिर जब घर जाना हो तो तवाफ़ विदा दोबारा करे (शैख अनीस उर रहमान आजमी हफिज़हुल्लाह).

(दूसरा विचार) शैख वसीउल्लाह अब्बास हफिज़हुल्लाह के विचार के प्रकार अगर कोई जिद्दाह जा रहा हो तथा यक्रीन के साथ उसका वापस आना तय हो तो तवाफ़ विदा जिद्दाह से वापस आने के पश्चात तथा विश्वास के साथ निकलते समय तवाफ़ विदा करे.

यानी तवाफ़ विदा के लिए ये शर्त के वो मक्का से हज्ज करके निकलते समय अंतिम कर्म हो.

शब्दावली में इसे "नफ़र" कहते है, यानी विश्वास के साथ निकलना. (जिद्दाह को जाना नफ़र विश्वास समझा जाएगा).

नोट : हैज़ तथा निफास वाली स्त्री तवाफ़ विदा ना करे, क्यों के उन्हें इस कर्म में छूट है.(2)

नोट : अगर तवाफ़ जियारत, अपने देश लौटने से पहले करता है तो उसमे तवाफ़ विदा की भी निय्यत मिला सकता है.



नोट : हज्ज की स्वीकारता के लिए मदीना तय्यिबा जाना आवश्यक नहीं तथा शर्त नहीं, लेकिन मैं तो इस बात पर जोर दूंगा के हाजी, मदीना तय्यिबा भी जाए क्यों के वो मदीना तय्यिबा की तीर्थ यात्रा और वहाँ के अजर एवं सवाब से दूर ना हो. लेकिन जो लोग हज्ज की स्वीकारता के लिए मदीना तय्यिबा की तीर्थ यात्रा को आवश्यक समझते है उनका ये विचार गलत एवं अप्रमाणित है.

(1) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय वुजूबि तवाफिल-वदाअ वसुकूतुहु अनिल-हाइज़ि - हदीस: 1327

(2) सहीह मुस्लिम - किताब अल-हज - अध्याय वुजूबि तवाफिल-वदाअ वसुकूतुहु अनिल-हाइज़ि - हदीस: 1328

मदीना तय्यिबा का तीर्थ यात्रा

मस्जिद नबवी ﷺ में एक नमाज़ का पुण्य एक हज़ार नमाजो के समान है तथा मस्जिद हराम में एक नमाज़ का पुण्य एक लाख नमाजो के समान है तथा मस्जिद अक्सा में एक नमाज़ का पुण्य ढाई सौ नमाज़ के समान है.(1)

हाजी, अगर मदीना तय्यिबा की यात्रा करना चाहे तो मस्जिद नबवी की तीर्थ यात्रा करे, लेकिन मदीना तय्यिबा पहुंच कर इन जगहों की यात्रायें इत्यादि वैध है :

(1) सहीह अल-बुखारी - किताब-अल-जुमुअति - अध्याय अब्बाबुत-ततव्वुइ - अध्याय फज़्लु अस्-सलाति फी मस्जिदि मक्कत वल-मदीनह - हदीस: 1190



सहीह अल-तर्घिब: 1179

1. मस्जिद नबवी की तीर्थ यात्रा :

मस्जिद नबवी में दुआ पढ़ कर प्रवेश हो फिर तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े。(1) लेकिन रियाजुल जन्नह (स्वर्ग की क्यारी में से एक क्यारी जो अल्लाह के रसूल ﷺ के मिम्बर तथा घर के बीच का हिस्सा है)(2) में दो रकात नमाज़ बेहतर है।

2. कबरे रसूल ﷺ की तीर्थ यात्रा :

हाजी, आप ﷺ की क़बर के पास जाए, बहुत ज्यादा विनमता के साथ धीमी आवाज़ में सलाम कहे तथा दरूद पढ़े, फिर हाजी अबू बकर सिद्दीक रज़िअल्लाहुअन्हु तथा उमर फारूक रज़िअल्लाहुअन्हु की क़बर के पास जाए तथा सलाम करे。(3)

(1) सहीह अल-बुखारी - नमाज़ की किताब - मस्जिदों के अध्याय - अध्याय यदि मैं मस्जिद में प्रवेश करता हूं, तो बैठक से पहले दो रकअत जमा करें - हदीस: 444

(2) सहीह अल-बुखारी - फज़्लु अस्-सलाति फी मक्कत वल-मदीनह - फज़िल मा बयनल-क़बरि वल-मिम्बरि - हदीस: 1195

(3) मुअत्ता मलिक - किताब कसरि अस्-सलाति फिस्-सफर - अध्याय मा जाअ फिस्-सलाति अलन-नबी ﷺ- हदीस: 397
बक्री उल गर्कद

मदीना तय्यिबा के क़बरस्तान का असल नाम बक्री उल गर्कद है तथा उसको जन्नतुल बखी कहने का प्रमाण नहीं मिला। “बक्री उल गर्कद में जिसकी क़बर है हर वो शख्स



जन्नती है” इसकी कोई प्रमाणता नहीं है.

3. बकी उल गर्कद की तीर्थ यात्रा :

ये मदीना तय्यिबा क क़बरस्तान है, हाजी वहाँ जाए, सहाबा रज़िअल्लाहुअन्हुम अज्मयीन तथा पूरे मोमिनो के लिए पश्चात्ताप (इस्तिग़फार) तथा उत्तम पदोन्नति की दुआ करे. यहाँ (क़बरस्तान में) प्रवेश होते समय ये दुआ पढना उचित है :

[अस्सलामु अलैकुम अहलददियार, मिनल मु'मिनीन वल मुस्लिमीन व इन्ना इंशा अल्लाहु बिकुम लाहिकून (व यरहमुल्लाहुल मुस्तक़दिमीन मिन्ना वल मुस्त'खिरीन) नस-अलुल्लाह लना वलकुमुल आफियह] (1)

4. शुहदाए उहुद की तीर्थ यात्रा :

हाजी शुहदाए उहुद की क़बर के पास जाए तथा उनके पदोन्नति के लिए दुआ करें. यहाँ भी बकी उल गर्कद (क़बरस्तान) वाली दुआ पढना उचित है. (2)

(1) सहीह - किताब अल-जनाइज़ - अध्याय मा युकालु इन्द दुखूलिल-कुबूरि वद-दुआइ लि अहलिहा हदीस: 974-975

(2) सुनन अल-तिर्मिज़ी - अध्याय अब्बाबुल-जनाइज़ि अन-रसूलिल्लाहि - अध्याय मा जाअ फिर -रुख़सति फी ज़ियारतिल कुबूरि - हदीस: 1054

5. मस्जिद कुबा की तीर्थ यात्रा :

- ❖ हाजी, वजू बनाकर मस्जिद कुबा जाए तथा दो रकात नफिल नमाज़ पढ़े, जिसका पुण्य एक उमरह के



समान है. (1)

नोट : शनिवार के दिन मस्जिद कुबा जाना नबी ﷺ की आदत थी.(2) इसलिए यदि हाजी शनिवार के दिन जाए तो उस सुन्नत का भी पुण्य प्राप्त होगा, इंशा अल्लाह.

- ❖ मदीना तय्यिबा में ठहरने के समय मस्जिद नबवी में नमाज़ आवश्यक और ज़रूरी समझकर पढ़ना किसी सही हदीस से प्रमाणित नहीं तथा न ही सहाबा रजिअल्लाहुअन्हुम ने ऐसा व्यवहार किया, लेकिन जितनी भी नमाज़ें पढ़ने का मौका मिले उतना पुण्य प्राप्त होता है. ध्यान रहे के नमाज़ से हज्ज एवं उमरह का कोई सम्बन्ध नहीं. इस विषय में जो हदीस है वो अप्रमाणित है.(3) इस अप्रमाणित हदीस के मुकाबले में सहीह हदीस पायी जाती है. जिसमे कोई स्थान, इलाका एवं मस्जिद की कोई महत्त्वता नहीं तथा इसमें चालीस नमाज़ों के बजाए चालीस दिन के नमाजो क प्रस्ताव है. हदीस का मतन ये है : (जिसने चालीस दिन सारी नमाज़ें जमात (सबके साथ मिलकर) तकबीर ऊला के साथ पढ़ी उसके लिए दो विषयो से दोषमुक्ति (बराअत)) लिख दी जाती है : 1. नर्क की आग से, 2. निफाक (पाखंडी) से.(4)

(1) मुसनद अहमद: 15981, सहीह

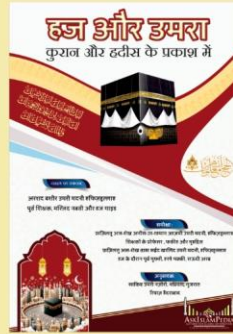
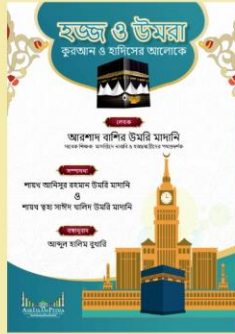
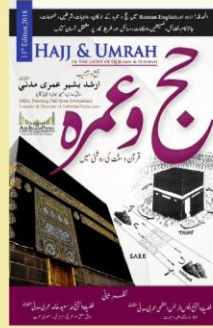
(2) बुखारी: 1193, मुस्लिम: 1399

(3) सिलसिलतु अल-अहादीस अज़-ज़ईफह वल-मौजूअह: 364



(4) सुन्न अल-तिर्मिज़ी - किताब अस्-सलाति अन
रसूलिल्लाहि ﷺ - अध्याय फी फज़िल अत-तकबीरतिल ऊला
- हदीस: 241





www.abmqurannotes.com | www.askislampedia.com | www.askmadanicom

SHAIKH ARSHAD BASHEER UMARI MADANI waffaqahullah
 Hafiz and Aalim, Fazil (Madina University, K.S.A), M.B.A
 Founder & Director of AskIslamPedia.com
 Chairman: Ocean the ABM School, Hyderabad, TS,INDIA
 +91 92906 21633 (WhatsApp only)